हम और
हमारा माहौल

भाग-1

(संशोधित संस्करण)

अफ़ज़ल हुसैन
एम.ए.एल.टी

प्रस्तुति
पाठ्य पुस्तक लेखन
एवं
सम्पादन-समिति

विषय-सूची



बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

(अल्लाह अत्यन्त दयावान और कृपाशील के नाम से।)

दो शब्द

अल्लाह तआला ने हमें एक सुडौल शरीर प्रदान किया है। इसके अन्दर विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ और योग्यताएँ रख दी हैं। हमारे शरीर के अस्तित्व और विकास के लिए हमारे बनानेवाले के कुछ नियम और ज़ाब्ते हैं, जिनका उल्लंघन हमारे अस्तित्व के लिए ख़तरनाक है। अतः अपने शरीर की बनावट, अंगों के कार्य, जीवन के अस्तित्व और शक्तियों एवं योग्यताओं के विकास की भली-भाँति जानकारी आवश्यक है, जिससे हम अपने जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने शरीर से पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

हमने एक विशेष प्रकार के समाज में जन्म लिया है। हमारा समाज एक विशिष्ट आकृति रखता है। इसके विभिन्न अंश हमारे जीवन को प्रभावित करते रहते हैं। हमारे व्यक्तित्व का बनना, बिगड़ना और हमारा चरित्र-निर्माण बहुत कुछ हमारे वातावरण पर निर्भर है। हमारी अभिरुचियाँ, हमारे विचार और कल्पनाएँ, यहाँ तक कि हमारी मनोवृत्तियाँ भी एक हद तक समाज ही के विभिन्न कारकों के प्रभाव का परिणाम हैं।

हम स्वभावतः सामाजिक प्राणी हैं। हम अकेले नहीं रह सकते। हम एक समाज में जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हैं। इसलिए समाज की आकृति, उसके विभिन्न क्रिया-कलाप और चरित्र एवं आचरण पर उनके प्रभाव और उन नियमों का ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है जिनके आधार पर हमारे समाज का गठन हुआ है।

सृष्टि के रचयिता ने अपने विश्व को विभिन्न चीज़ों से सजाया है। हमें पैदा करके "ख़िलाफ़त फ़िल-अर्ज़" (धरती पर प्रतिनिधित्व) प्रदान किया है। विश्व की समस्त चीज़ें तथा प्रकृति की समस्त शक्तियाँ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में किसी न किसी स्तर पर हमारे ही पद की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होती हैं। इसलिए इनके सम्बन्ध में आवश्यक ज्ञान और उनसे लाभ उठाने की विधि भी जानना आवश्यक है। संक्षेप में यह कि अपने शरीर, अपने समाज या प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण-सम्बन्धी आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराना शिक्षा-योजना का महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए। इन विषयों पर तकनीकी हैसियत से प्रकाश डालनेवाली पुस्तकों की कमी नहीं है, लेकिन उन पुस्तकों के लेखकों की मनोवृत्ति का जायज़ा लेने के बाद महसूस होता है कि वे विश्व को जाने या अनजाने रूप से ईश्वर-रहित मानकर इन विषयों पर क़लम उठाते हैं। इसलिए उनकी

रचनाएँ हानिकारक प्रभाव के कारण हमारे बच्चों के लिए उचित नहीं हैं। इन्हीं कारणों से हमने 'हम और हमारा माहौल' की पुस्तकों का यह सिलसिला आरम्भ किया है। आशा है कि यह सेट विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद और मनोरंजक सिद्ध होगा। 'व-मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह' (तौफ़ीक़ तो केवल अल्लाह की ओर से है)।

शिक्षकों से निवेदन है कि वे यथासम्भव विद्यार्थियों को अवलोकनों और प्रयोगों के अवसर उपलब्ध कराएँ। जिज्ञासा एक स्वभाव है जो बचपन में पराकाष्ठा पर होती है। आँख खोलने के बाद ही से बच्चे अपने आस-पास की चीज़ों और शक्तियों पर जिज्ञासापूर्ण नज़र डालते हैं और अपने पूरे अस्तित्व में एक प्रश्नवाचक चिह्न बन जाते हैं। इसलिए इस विषय में उन्हें स्वाभाविक लगाव होता है, मगर स्वभाव की पूर्ति कानों से अधिक आँखों से होती है। आप विद्यार्थियों के सामने भाषण कम से कम दें। उन्हें स्वयं अवलोकन और प्रयोग करके समझने में सहायता करें। आरम्भिक कक्षाओं में किताब पर अधिक निर्भर न रहें; क्योंकि विद्यार्थियों का ध्यान केवल शब्दों पर होता है, अर्थ की ओर मस्तिष्क नहीं जाता। इसलिए एक बात अच्छी तरह समझा देने के बाद ही किताब पढ़ने के लिए कहें।

— अफ़ज़ल हुसैन

1

शरीर

अल्लाह ने हमें पैदा किया।



आँखें दीं। किस लिए?

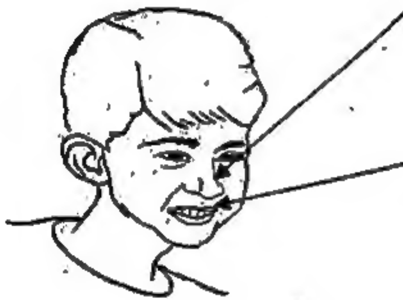
देखने के लिए।

कितनी? दो।

सुनने के लिए क्या दिए?

कान भी दो दिए।





यह क्या है?

नाक। ख़ुश्बू और बदबू जानने के लिए।

यह क्या है?

मुँह। मेवा, मिठाई आदि खाने के लिए।

मुँह में दाँत दिए हैं, खाना ख़ूब चबाने के लिए।

दौड़-भाग के लिए क्या दिए?

दो पैर।

इनसे हम चलते हैं, फिरते हैं, खेलते हैं, कूदते हैं।



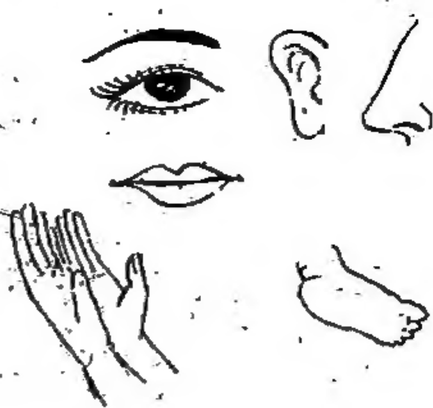


हाथ दिए। एक नहीं, दो-दो।

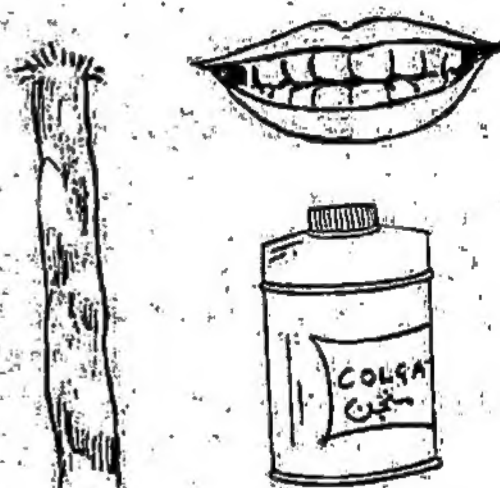
हाथों और पैरों में पाँच-पाँच क्या हैं?

उँगलियाँ।

कितने अच्छे हैं, अल्लाह मियाँ!
एक सुन्दर-सा शरीर बनाया।
शरीर के कई अंग हैं।
आँख, कान, नाक, मुँह, हाथ और पैर इत्यादि।
हर अंग बड़े काम का है।



तन पाक तो मन पाक।
हम पाक-साफ़ रहेंगे।
ख़ूब अच्छी तरह साबुन से नहाएँगे।
सारा जिस्म साफ़ रखेंगे।
चम-चम, चम-चम दाँत चमकाएँगे।
कैसे भई, कैसे?
मंजन और दातुन से।
रोज़ मंजन, दातुन या टूथपेस्ट आदि से दाँत साफ़ करेंगे।
हाथ मुँह भी साबुन से अच्छी तरह धोएँगे।

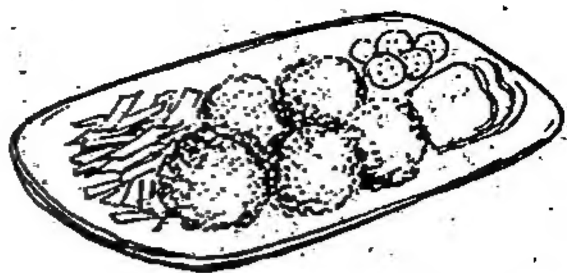


निर्देश :—

शिक्षक शरीर के मुख्य अंगों के नाम और उनके प्रमुख काम छात्रों को मौखिक रूप से समझा दें। गन्दगी से घृणा दिलाते हुए स्वच्छ रहने के लिए प्रोत्साहित करें। आँख, कान, नाक, दाँत, हाथ और पैर आदि ख़राब हो जाने से जो तकलीफ़ होती है उसे बताकर उन्हें स्वच्छ रहने और उनकी सुरक्षा करने की व्यावहारिक विधियाँ बताएँ।

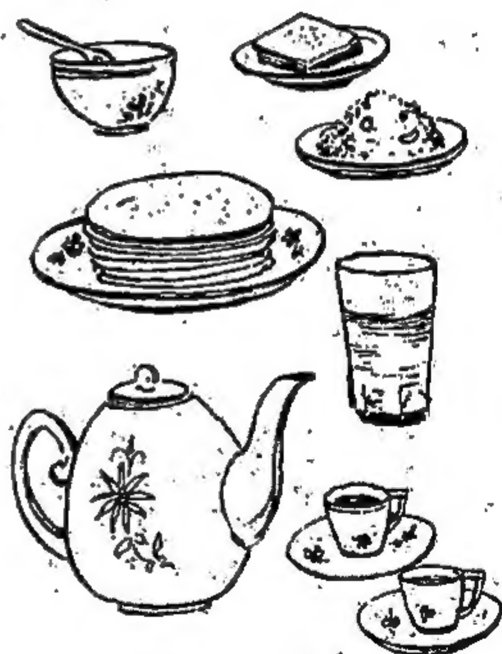
2

खाना



अल्लाह ने हमको पैदा किया। हमारी ज़रूरत की तमाम चीज़ें पैदा कीं। खाने के लिए तरह-तरह के मेवे, फल, सब्ज़ियाँ और अनाज पैदा किया। खाने से हमें ताक़त मिलती है और हमारी सेहत भी अच्छी रहती है। इसी लिए हम दिन में दो बार खाना खाते हैं और अक्सर दो बार नाश्ता। इसके अलावा भी हम तरह-तरह की चीज़ें खाते रहते हैं। जैसे फल, मिठाई, लड्डू, वग़ैरह।

आज हमने लड्डू खाए हैं। मीठे-मीठे बड़े मज़े के थे। हमारे घर में बनाए गए थे।



हमारी अम्मी नाश्ता बड़े मज़े का बनाती हैं। हम सब सुबह सवेरे उठते हैं। अम्मी फ़ज्र की नमाज़ के बाद ही नाश्ते की तैयारी में लग जाती हैं।

सूरज निकलते ही नाश्ता तैयार हो जाता है। नाश्ते में कभी हलवा-पराठा होता है, कभी दूध-दलिया। किसी दिन डबल रोटी और मक्खन, कभी कुछ और। नाश्ता करके हम स्कूल चले जाते हैं। दोपहर में

आकर खाना खाते हैं। खाने में कभी रोटी-सालन, कभी रोटी-तरकारी और कभी पुलाव-ज़र्दा होता है।



खाने से पहले हम हाथ-मुँह धो लेते हैं। फिर बिसमिल्लाह पढ़कर खाना शुरू करते हैं। हमेशा दाहिने हाथ से खाते हैं।

एक दिन चूक हो गई। शोरबा कुर्ते पर गिरा। कुर्ता ख़राब हो गया। अब हम सँभलकर खाते हैं। खाना गिरने नहीं देते। खा-पी लेने के बाद हाथ-मुँह अच्छी तरह साफ़ कर लेते हैं।

छुट्टी होने पर शाम को घर लौटते हैं। अम्मी फिर नाश्ता देती हैं। कभी मिठाई-नमकीन, कभी फल और केक आदि। हम नाश्ता करके थोड़ी देर खेलते हैं। मग़रिब की नमाज़ के बाद खाना खाते हैं।





इस तरह हम दो बार नाश्ता करते हैं। एक सवेरे और दूसरी बार स्कूल से लौटकर। दो बार खाना खाते हैं। एक दोपहर में और एक मग़रिब की नमाज़ के बाद।

हम बार-बार नहीं खाते, केवल समय पर खाते हैं। खाने में जल्दी नहीं करते। ख़ूब चबा-चबाकर खाते हैं। इसी लिए तो हमारे पेट में दर्द नहीं होता।

खाने-पीने के बाद हम हमेशा अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

निर्देश :

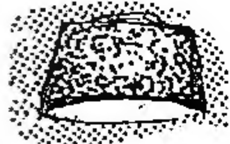
बच्चों को खाना खाने के सही तरीक़े और ज़रूरी बातें समझाएँ।

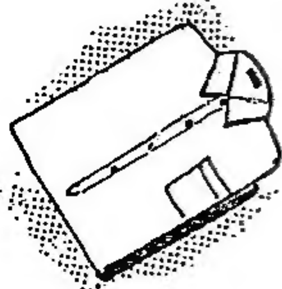
3

हमारे पहनावे

खाने और पीने के बाद इनसान की सबसे बड़ी ज़रूरत लिबास है।

यह मेरी टोपी है। मेरी टोपी नीले रंग की गोल-गोल है। यह मैंने ईद के मौक़े पर ली थी। मुझे टोपी अच्छी लगती है। इसी लिए मैं सिर पर टोपी पहनता हूँ।





यह क़मीस है। वह पाजामा। हम कुर्ता-पाजामा पहनते है। अब्बू, भैया और हम पैंट-शर्ट भी पहनते हैं। कपड़े दर्ज़ी सीता है।



छोटी बहन फ्रॉक पहनती है। अम्मी और बाजी शलवार-क़मीज़ या जम्पर पहनती और दुपट्टा ओढ़ती हैं। अम्मी कभी-कभी साड़ी भी पहनती हैं।



यह कोट है। कोट गर्म है। सर्दी लगती है तो कोट पहन लेता हूँ, फिर सर्दी नहीं लगती।



ये जूते हैं। जूते चमड़े के हैं। हम इन्हें पैरों की हिफ़ाज़त के लिए पहनते हैं। आम तौर पर हम नंगे पैर नहीं खेलते। मैदान में खेलते वक़्त

हम जूते बदल लेते हैं। खेल का जूता कपड़े या रबर आदि का होता है। घर पर हम आम तौर पर चप्पल पहनते हैं।





वह शेरवानी है। अब्बू शेरवानी पहनते हैं। मैं भी बड़ा होकर शेरवानी पहनूँगा।

हमारे अब्बू के पास चश्मा भी है। चश्मा आँखों पर लगाते हैं। चश्मे को ऐनक भी कहते हैं।





हमारे अब्बू के पास घड़ी भी है। हमारे अब्बू बाएँ हाथ की कलाई पर घड़ी बाँधते हैं। कुछ लोग दाहिने हाथ में बाँधते हैं। घड़ी में समय देखते हैं।

अब्बू जब बाहर जाते हैं तो छड़ी या छाता ले लेते हैं। छड़ी से सहारा लिया जाता है। पानी बरस रहा हो या तेज़ धूप हो तो छाता हमें भीगने से और धूप से बचाता है।

निर्देश :

छात्रों और शिक्षकों के विभिन्न वस्त्रों को दिखाएँ। घर में और घर से बाहर पहने जानेवाले वस्त्रों को ध्यान से देखने और अन्तर महसूस करने की प्रेरणा दें। विभिन्न मौसमों और उत्सवों पर वस्त्रों में परिवर्तन का भी उचित अवसरों पर अवलोकन कराते रहें। जेब-घड़ी, टाइमपीस और दीवार-घड़ी का अवलोकन कराएँ।

4



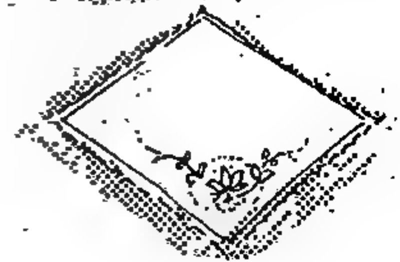
घर

यह हमारा घर है। हमारा घर हमें बहुत प्यारा है। घर में अब्बू, अम्मी और हमारे भाई-बहन रहते हैं। अब्बू और अम्मी बड़े अच्छे हैं।

अम्मी हमको खिलाती हैं, पिलाती हैं, हमारे लिए बड़ी मेहनत करती हैं। हमारे भाईजान और हमारी बाजी भी घर के कामों में अम्मी का हाथ बटाती हैं। ये दोनों बड़े अच्छे हैं। भाईजान गेंद खेलने को देते हैं। बाजी गुड़िया और खिलौने बना देती हैं। तकिये और रूमाल में फूल काढ़ देती हैं।

हमारा एक छोटा-सा भाई भी है। ग़ूँ-ग़ूँ बोलता है। ख़ूब खेल-तमाशे करता है।



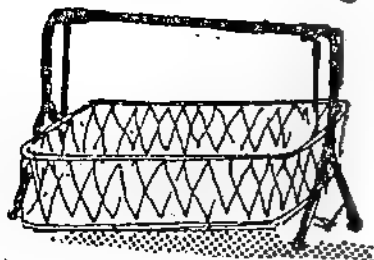


हम सब भाई-बहन मिल-जुलकर रहते हैं। एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। मार-पीट बिलकुल नहीं करते। जो कुछ मिलता है आपस में बाँट लेते हैं। हम अब्बू-अम्मी की सेवा करते हैं। उनका कहना मानते हैं। हमारा घर बहुत सुन्दर है।



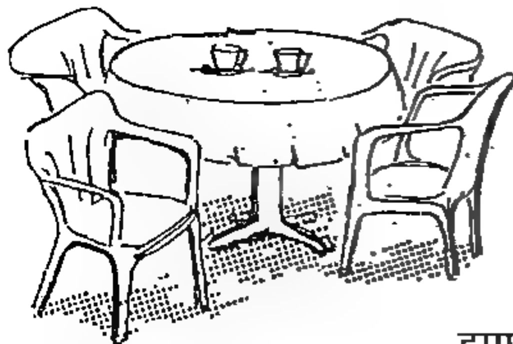
हमारे घर में सोने-बैठने के लिए बेड, दीवान, पलंग और चारपाई हैं। उनपर हम सब सोते और आराम करते हैं।

मुन्ना के लिए एक पालना है। पालने में मुन्ना लेटता है। रोता है तो हम पालना हिला देते हैं।

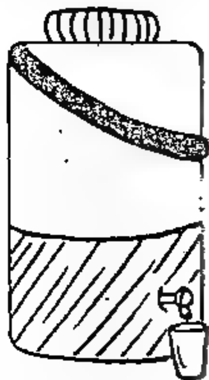


हमारे घर में मेज़ और कुर्सियाँ भी हैं। इनपर बैठकर हम लिखते-पढ़ते हैं।

हमारे घर में अल्लाह की मेहरबानी से ज़रूरत की सभी चीज़ें हैं। तरह-तरह के बरतन हैं। पतीली में खाना पकता है। पतीली को 'देगची' भी कहते हैं। प्लेट और प्याले में खाना खाते हैं। प्याली से चाय पीते हैं। पानी पीने के लिए ग्लास हैं।



हमारा घर बहुत अच्छा है। यह ईंट और सीमेंट से बहुत मज़बूत बना है। इसमें चार कमरे, एक बावरचीख़ाना (रसोईघर), एक लैटरिन-बाथरूम और एक स्टोर रूम है।



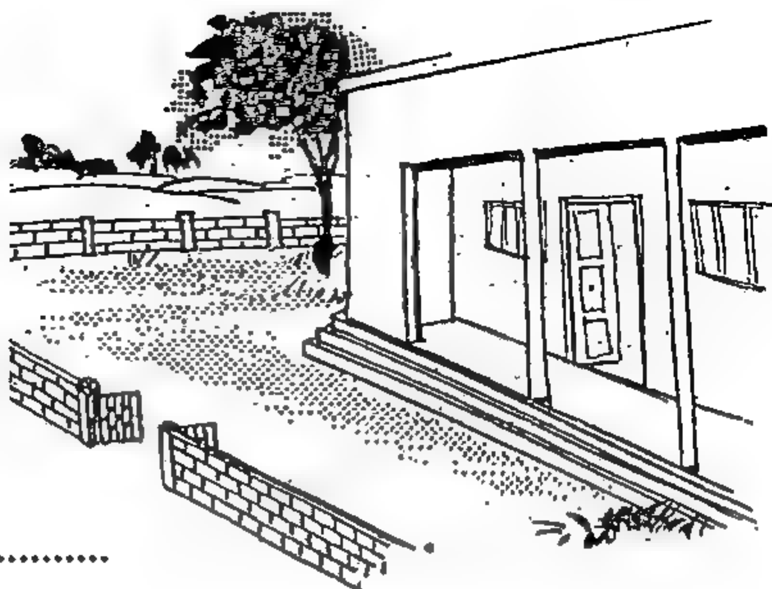
घर अल्लाह की एक बड़ी नेमत है। यह हमें गर्मी, सर्दी और बारिश से बचाता है। अल्लाह तआला हमारे घर को सदा आबाद रखे!

निर्देश :

छात्रों से बातचीत करके उनके घर की विस्तृत जानकारी लें। प्रश्न ऐसे हों जिनसे छात्रों के ज्ञान में वृद्धि हो। घर के सभी सदस्यों के साथ उचित व्यवहार, माता-पिता की सेवा और भाई-बहनों से प्यार करने के लिए प्रेरित करें।

5

स्कूल



टन-टन-टन-टन............

यह क्या?

स्कूल की घंटी बज रही है।

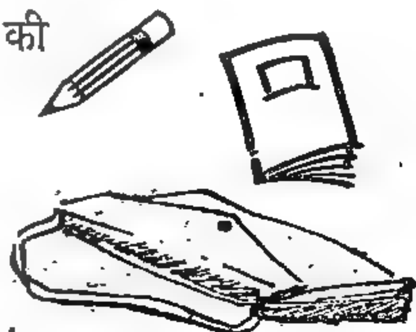
स्कूल जाने का समय हो गया, तैयार हो जाओ। जल्दी करो, देर न हो जाए। सारी चीज़ें ठीक हैं ना? अच्छी तरह देख लेना, कुछ रह न जाए।

हाँ, देख लिया। सब ठीक है।

किताबें बैग में रख ली हैं।

पेंसिल बॉक्स और कापियाँ भी रख ली हैं।

लंच बॉक्स भी रख लिया है। पानी की बोतल में पानी भी भर लिया है।



अब ड्रेस और जूते पहनकर स्कूल जाने के लिए तैयार हूँ।

अच्छा चलो, अब चलें। रुको मत, चले चलो। वक़्त पर स्कूल पहुँचना है।

टन-टन-टन-टन.......लो दूसरी घंटी बज गई।

मास्टर साहब आ गए।

अस्सलामु अलैकुम!

हाज़िरी हो गई। अब क्लास में चलें और अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाएँ। अब पढ़ाई शुरू होगी। बात-चीत बिल्कुल बन्द।

हम स्कूल में लिखना-पढ़ना और अच्छी-अच्छी बातें सीखते हैं। दीन (धर्म) और दुनिया की हक़ीक़त जानते हैं। दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक और बड़ों के साथ इज़्ज़त करना सीखते हैं।

हम अपने उस्ताद (शिक्षक) की बड़ी इज़्ज़त करते हैं। वे ज़ो काम कहते हैं, करते हैं।

मेरा स्कूल बहुत सुन्दर और बहुत बड़ा है। उसमें बहुत सारी क्लासें हैं।

हम अपनी क्लास को साफ़-सुथरा रखते हैं, कूड़ा-करकट बाहर कूड़ेदान में डालते हैं।

जो काम करते हैं टीचर (शिक्षक) से पूछकर करते हैं।

कुछ करना हो या कहीं जाना हो तो उनकी इजाज़त लेते हैं।

हमने अपना पाठ सुना दिया। नया पाठ पढ़ लिया। स्कूल का काम भी कर लिया। ड्राइंग और खिलौने भी बना लिए। खेले-कूदे और दूसरे काम भी किए।

टन-टन-टन-टन........लो छुट्टी की घंटी भी बज गई ।

आओ अब घर चलें।

अस्सलामु अलैकुम!

निर्देश :

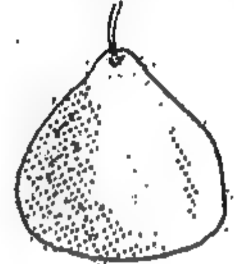
बच्चों को समय पर स्कूल पहुँचने और आने से पहले लिखने-पढ़ने की सारी सामग्री रख लेने की हिदायत दें। कक्षा के शिष्टाचार, सफ़ाई और सामान को व्यवस्थित और क्रम से रखना सिखाएँ। छात्रों और अध्यापकों के साथ आचरण का व्यावहारिक प्रशिक्षण दें।

6

फल और सब्ज़ियाँ

अल्लाह ने हमारे खाने के लिए कैसी-कैसी उम्दा चीज़ें पैदा की हैं। ख़ुशबूदार और रसीले फल, हरी-हरी सब्ज़ियाँ। आइए इनके बारे में कुछ जानें—

फल

यह आम है।

वह अमरूद है।

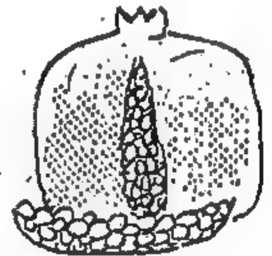
आम और अमरूद मीठे फल हैं।



ये सेब हैं।

वे सन्तरे हैं।

सेब-सन्तरे भी पेड़ों में फलते हैं।

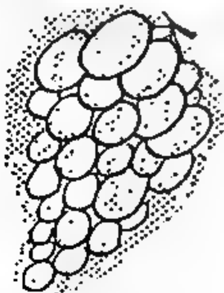



यह शरीफ़ा है।

वह अनार है।



शरीफ़ा और अनार भी मीठे फल हैं। मगर इनमें बीज बहुत होते हैं। मैंने शरीफ़े और इमली के बहुत-से बीज इकट्ठे किए हैं।

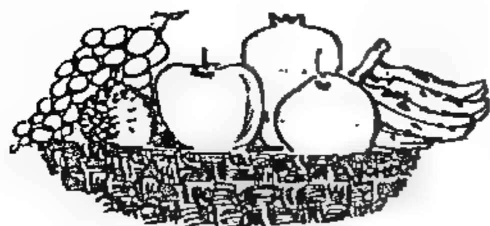



यह अँगूर का गुच्छा है।

वे केले की फलियाँ हैं।

मुझे केले और अँगूर बहुत पसन्द हैं।

आम, अमरूद, केले, अँगूर, सेब, अनार, शरीफ़ा, नारंगी, सन्तरे, लीची और ख़रबूज़ा मीठे फल हैं।



यह फलों की एक टोकरी है।
ज़रा देखो तो इसमें कौन-कौन से फल हैं?

सब्ज़ियाँ



वह शलजम है। शलजम एक सब्ज़ी है। सब्ज़ी कच्ची नहीं खाते, पकाकर खाते हैं। फल कच्चे खाए जाते हैं।



यह बैंगन है। वह लौकी है। बैंगन और लौकी भी सब्ज़ियाँ हैं।

आलू, गोभी, भिण्डी और तुरई भी सब्ज़ियाँ हैं।

पालक, मेथी, ख़ुरफ़ा और बथुआ साग हैं। साग और सब्ज़ियाँ पकाकर रोटी या चावल के साथ खाते हैं।

गाजर, मूली, सिंघाड़ा, ख़ीरा, ककड़ी, टमाटर को कच्चा भी खाते हैं और उबालकर भी।

अल्लाह तआला ने बहुत-से फल और बहुत-सी सब्ज़ियाँ पैदा की हैं।

मज़े से फल और सब्ज़ियाँ खाओ, खाकर ख़ूब स्वस्थ हो जाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो।

निर्देश :

छात्रों को मौसमी फलों और सब्ज़ियों को देखने का अवसर प्रदान करें, उनके नाम बताएँ और उनकी पहचान भी कराएँ।

7



फूल और पेड़-पौधे



अरे! यह फूल देखो? कितना ख़ूबसूरत (सुन्दर) है! यह गुलाब है।

गुलाब बहुत ख़ूबसूरत फूल होता है। रंग कितना प्यारा है। ज़रा सूँघो, ख़ुशबू कितनी अच्छी है!

वह गुड़हल है। गुड़हल का फूल लाल-लाल होता है। इसको सूँघो। ख़ुशबू नहीं है, लेकिन रूप बहुत प्यारा है। तभी तो बुद्धू को मास्टर साहब ने गुड़हल का फूल कहा था। सूरत प्यारी और ख़ूबी कुछ नहीं।

यह कौन-सा फूल है? कमल।

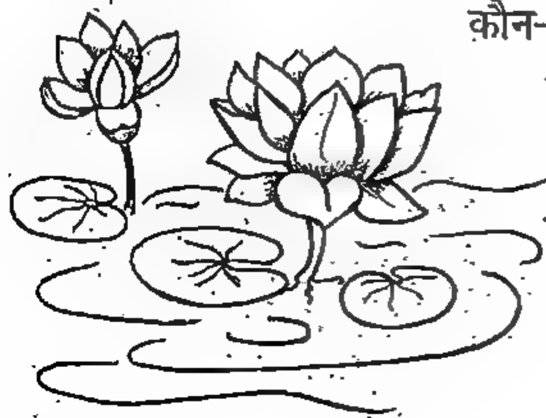


कमल कहाँ खिलता है? तालाब में।

तालाब चलेंगे। कमल का फूल लाएँगे। फिर उसकी शक्ल, सूरत और बू मालूम करेंगे।

तुमने कौन-कौन से फूल देखे हैं? उनमें कौन-सा तुम्हें ज़्यादा अच्छा लगता है? उसका रंग और बू बताओ।

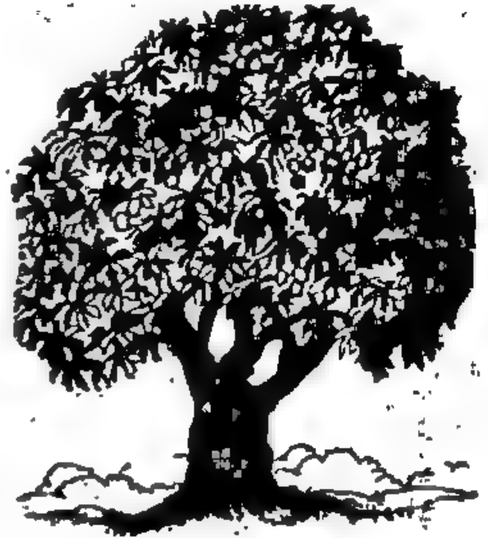
तुम्हें ख़ुशबू किस फूल की पसन्द है?





फूल बहुत अच्छे लगते हैं। उनसे हार और गुलदस्ते बनते हैं। शादी वग़ैरा के मौक़े पर फूलों की मालाएँ बनाकर पहनी जाती हैं। औरतें अपने बालों में इसे लगाती हैं।

अम्मी और बाजी भी बालों में फूल लगाती हैं।



फूल रंग-बिरंगे होते हैं। कोई लाल, कोई पीला, कोई सफ़ेद तो कोई नीला। बहुत-से ख़ुशबूदार होते हैं। और कुछ में ख़ुशबू बिल्कुल नहीं होती।

फूल पेड़ों और पौधों में लगते हैं। पेड़ बड़े होते हैं, जैसे—नीम, आम, गुलमोहर, सेमल और जामुन वग़ैरा। पौधे छोटे होते हैं, जैसे—गुलाब, गेंदा वग़ैरा।

पौधे क्यारी और गमले में लगाए जाते हैं। पेड़ ज़मीन में लगाए जाते हैं।



यह हज़ारा है। हज़ारे की टोंटी में बहुत-से छेद हैं। हज़ारे में पानी भरकर पौधे सींचे जाते हैं।



फूलों पर तितलियाँ और शहद की मक्खियाँ बैठती हैं। तितलियों का रंग फूलों जैसा होता है। उनके पंख न हिलें तो तुम उन्हें

पहचान न सको। तितलियाँ फूलों का रस चूसती हैं।



मधु-मक्खियाँ फूलों का रस चूस-चूसकर शहद बनाती हैं। मीठा शहद हम मज़े से खाते हैं, दवाओं में भी डालते हैं। मक्खियाँ शहद हमारे लिए बनाती हैं। अल्लाह तआला ने हमारे लिए कितनी अच्छी व्यवस्था कर रखी है!!

निर्देश :

अवसर हो तो बच्चों को किसी बड़े बाग़ में ले जाकर भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों का अवलोकन कराएँ। पौधों, बेलों और पेड़ों को भी दिखाएँ और अन्तर समझाएँ।

8

खेल-खिलौने

मेरे पास बहुत-से खिलौने हैं। इनसे मैं खेलता हूँ।

मेरे पास एक छोटी-सी बन्दूक़ है। बन्दूक़ में कार्क लगाकर छोड़ता हूँ। बड़े ज़ोर की आवाज़ निकलती है। फ़ट-फ़ट! तुम सुनो तो डर जाओ।



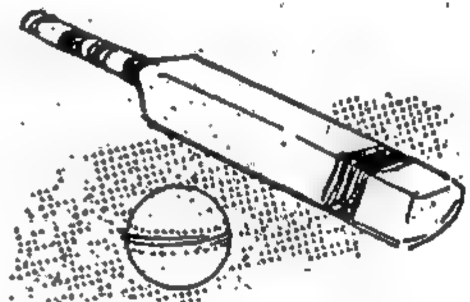
बहुत-से रंग-बिरंगे ग़ुब्बारे हैं। मुँह से फूँककर हवा भरता हूँ। वे फूलकर बड़े हो जाते हैं। बड़े अच्छे लगते हैं। ज़रा-सी हवा चले तो उड़ जाएँ और फिर हाथ न आएँ।

एक लट्टू है, लट्टू पर डोरी लपेटकर नचाता हूँ।



रबर की एक छोटी-सी गेन्द है। लकड़ी का एक छोटा-सा बल्ला है। गेंद-बल्ले से हम मैदान में खेलते हैं।

मैदान में खेल की बहुत-सी चीज़ें हैं।



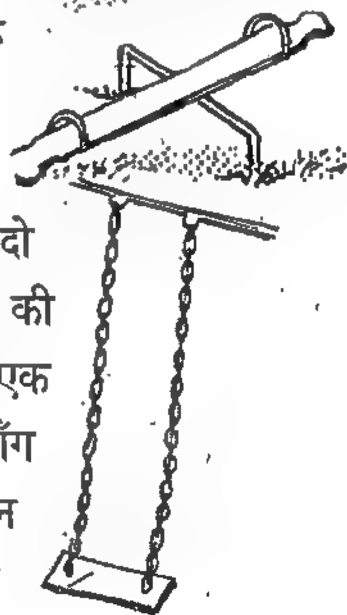
एक फिसलन है। फिसलन पर सीढ़ी लगी है। सीढ़ी से हम ऊपर चढ़ ज़ाते हैं। ऊपर से फिसलते हैं। आँख झपकते ही नीचे आ जाते हैं। फिसलने में बड़ा मज़ा आता है। चोट बिलकुल नहीं लगती।

मैदान में एक सी-सॉ भी है। सी-सॉ लकड़ी के लम्बे तख़्ते से बना है। तख़्ते के दोनों सिरों पर दो बच्चे बैठ जाते हैं। फिर दोनों ज़ोर लगाते हैं। ताक़तवर बच्चा दबा ले जाता है।

मैदान में झूले भी हैं। हम उनपर झूलते हैं। झूला जब ऊपर से नीचे आता है तो सीने में गुदगुदी-सी होने लगती है।



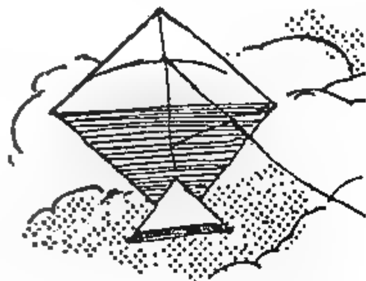
कभी-कभी हम कुश्ती भी लड़ते हैं। कभी कबड्डी खेलते हैं। कभी दौड़ में मुक़ाबला करते हैं। मैं मुक़ाबले में आगे निकल जाता हूँ। दौड़ दोनों टाँगों से होती है और एक टाँग से भी। एक टाँग की दौड़ में एक टाँग ऊपर उठाए रहते हैं।



मुझे तीन टाँग की दौड़ भी आती है। दो लड़के पास-पास खड़े हो जाते हैं। एक-दूसरे की गर्दन में हाथ डाल लेते हैं। दोनों की एक-एक टाँग मिलाकर बाँध दी जाती है। एक-एक टाँग खुली रहती है। इस तरह दोनों लड़के तीन टाँगों से दौड़ते हैं। इस दौड़ में बड़ा मज़ा आता है।

मैदान में कुछ लड़के पतंग भी उड़ाते हैं।

पतंग उड़ाने में मुझे मज़ा नहीं आता।



घर पर हम कभी-कभी आँख-मिचौली खेलते हैं। दीवार के पास एक लड़का आँखें

बन्द करके खड़ा हो जाता है। बाक़ी लड़के छुप जाते हैं। दूर से कोई लड़का आवाज़ लगा देता है। तब वह लड़का आँखें खोलकर सबको ढूँढता फिरता है। जो पकड़ा जाता है फिर वही यह खेल शुरू करता है।

हम अन्धे-भैंसे का खेल भी खेलते हैं। एक लड़के की आँखों पर पट्टी बाँध देते हैं और हाथ में कोई चीज़ रख देते हैं। फिर उसे हेर-फेर के रास्ते से ले जाते हैं। उसके हाथ से चीज़ रखवा देते हैं। आँखों पर पट्टी बँधी रहती है। दूर ले जाकर पट्टी खोल देते हैं। फिर वह अपने हाथ की रखी चीज़ ढूँढता फिरता है। इस तरह हम बहुत-से खेल खेलते हैं।

इनमें कुछ खेल तो ऐसे हैं जिनमें हमारी बहनें भी कभी-कभी हमारे साथ खेलती हैं। लेकिन ज़्यादातर वे अलग ही अपने खेल खेला करती हैं। वे ज़्यादातर गुड़ियों से खेलती हैं। इसमें उन्हें बहुत मज़ा आता है। वे रस्सियाँ कूदती हैं और आँख-मिचौली भी खेलती हैं।

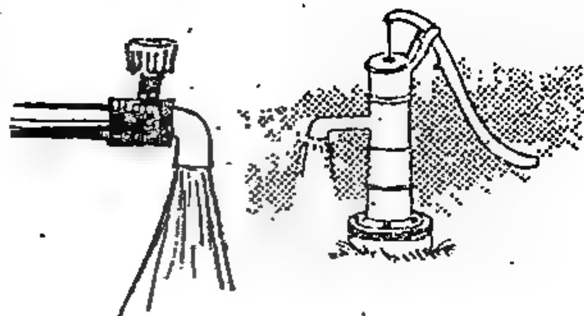
खेले में हम झूठ नहीं बोलते, न बेईमानी करते हैं।

खेल के बाद खेल का सामान सँभालकर रख देते हैं, टूटने-फूटने नहीं देते।

निर्देश :

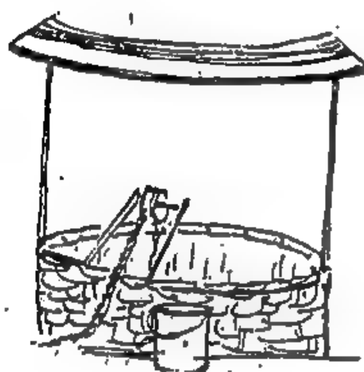
आस-पास के प्रचलित खेल-खिलौनों से बच्चों को परिचित कराएँ। उपर्युक्त खेल-खेलने का अवसर दें। खेल-कूद में झूठ न बोलने और बेईमानी न करने की हिदायत दें। खेल की सामग्री को सँभालकर रखने और टूट-फूट से बचाने की आदत भी डलवाएँ।

पानी



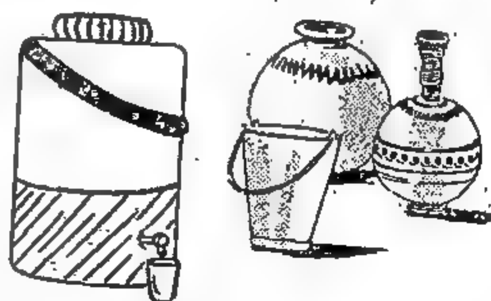
यह नल है।

वह हैण्ड-पम्प है। इससे पानी निकाला जाता है। इस पानी को हम पीते हैं। इससे हाथ, मुँह और कपड़े धोते हैं। सफ़ाई का काम भी इससे करते हैं।



यह कुआँ है। कुएँ का पानी डोल-रस्सी से निकाला जाता है।

पानी गड्ढे और तालाब में भी होता है, नदी और नाले में भी। मगर यह पानी गन्दा होता है। हम गन्दा पानी नहीं पीते। गन्दे पानी से बीमारी फैलती है। हम नल, या हैण्ड-पम्प का साफ़ पानी पीते हैं। गड्ढे, तालाब और नदी-नाले का पानी जानवर पीते हैं। खेत इसी पानी से सींचे जाते हैं।



पीने का पानी घड़े, मटके, सुराही, बाल्टी और प्लास्टिक की बड़ी बोतलों या जारों में रखा जाता है। खुला नहीं, ढक कर रखा जाता है। क्यों? ताकि कीड़े-मकोड़े गिरकर इस पानी को गन्दा न कर दें। बिल्ली, कुत्ता, चूहा आदि मुँह न डाल दे।

हम पीने के पानी में हाथ नहीं डालते।

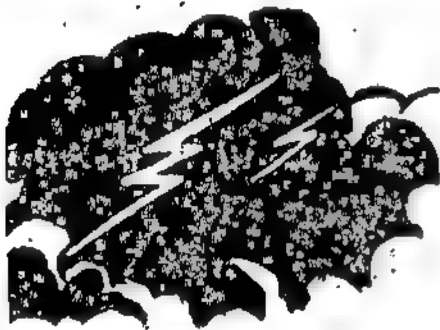




घड़े और मटके में डोंगा डालकर पानी निकालते हैं। फिर गिलास में डालकर पीते हैं। सुराही से गिलास में उँडेलकर पीते हैं। अगर ज़्यादा पानी की ज़रूरत हो तो पहले लोटा या जग भर लेते हैं। फिर उसे गिलास में उँडेलकर पीते-पिलाते हैं। बाल्टी से पानी निकालना हो तो मग का इस्तेमाल करते हैं।

यह सारा पानी आता कहाँ से है?

अल्लाह मियाँ बादल से बरसाते हैं। हवा काले और घने बादल उड़ाकर लाती है।



चम-चम-चम-चम बिजली चमकती है, गड़-गड़-गड़-गड़ बादल गरजता है। फिर रिम-झिम, रिम-झिम पानी बरसता है। गड्ढे, तालाब, नदी, नाले सब भर जाते हैं। कुछ ज़मीन पी लेती है। कुछ नालियों से बहकर गड्ढे, तालाब नदी आदि में पहुँच जाता है।

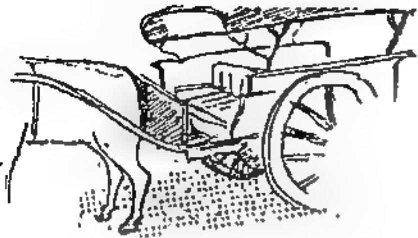
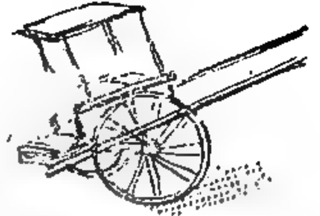
पानी जब भी गिराओ, ऊँचाई से नीचे की तरफ़ बहता है। तभी तो नालियाँ ढालदार बनाते हैं और वुज़ू ऊपर बैठकर करते हैं।

पानी अल्लाह की बड़ी नेमत है। इसके बिना जीना दुशवार है। इसलिए पानी हमें बरबाद नहीं करना चाहिए।

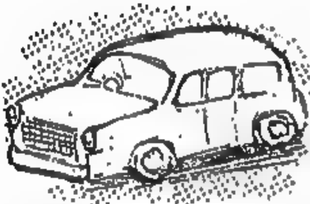
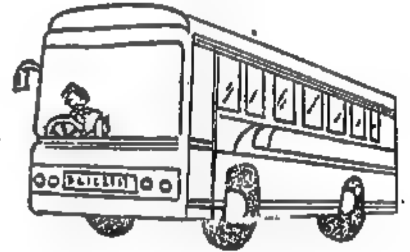
निर्देश :

बच्चों को गड्ढे और तालाब आदि दिखाकर उनके पानी के गन्दे होने का एहसास कराएँ। पीने का पानी सावधानी से रखने का महत्त्व समझाएँ।

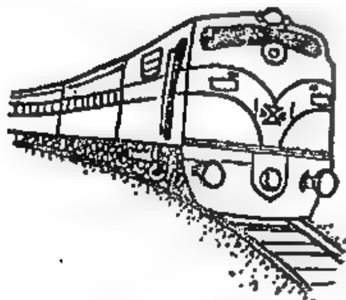
सवारियाँ

यह ताँगा है। वह इक्का है। ताँगे और इक्के में घोड़े जोते जाते हैं। घोड़े बहुत तेज़ दौड़ते हैं। इक्के और तांगे में हम बैठते हैं।

यह कार है। वह बस है। इनको इंजन चलाता है। इंजन में डीज़ल, पेट्रोल या गैस का इस्तेमाल होता है। मोटर और लारी भी हमारी सवारियाँ हैं।




यह रेलगाड़ी है। वह हवाई जहाज़ है। रेलगाड़ी लोहे की पटरी पर चलती है। हवाई जहाज़ हवा में उड़ता है। जल्दी जाना हो तो हवाई जहाज़ से सफ़र करते हैं।

रेलगाड़ी को इंजन खींचता है। पहले इस इंजन को कोयले और पानी से चलाते थे।

आज कल ज़्यादातर डीज़ल और बिजली की शक्ति से इंजन चलाया जाता है। रेलगाड़ी से हम दूर-दूर का सफ़र करते हैं।



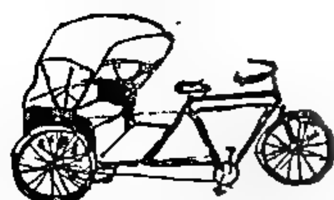
यह नाव है।

वह जहाज़ है। दोनों पानी में चलते हैं। नाव से नदी और जहाज़ से समुद्र पार करते हैं।



जहाज़ पर बैठकर दादा जी हज को गए थे।

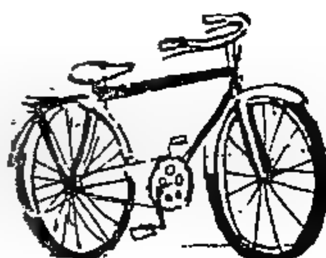
आजकल हवाई जहाज़ के द्वारा हज के लिए जाते हैं। क्योंकि पानी के जहाज़ में वक़्त ज़यादा लगता था।



यह रिक्शा है।

वह साइकिल है।

इनको घोड़े नहीं खींचते, आदमी पैर से चलाते हैं। रिक्शा और साइकिल भी हमारी सवारियाँ हैं।



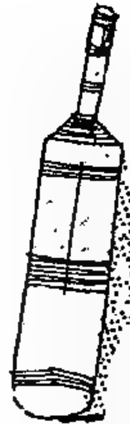
हाथी, घोड़े, ऊँट और ख़च्चर पर भी सवारी की जाती है।

सवारियों से बड़ी आसानी हो गई है। दूर जाना हो तो जल्दी से पहुँच जाते हैं। पैदल नहीं चलना पड़ता। अधिक पैदल चलते हैं तो पैर में दर्द होने लगता हैं।

निर्देश :

आस-पास चलनेवाली सवारियों का अवलोकन कराएँ।

कहाँ? (दिशाओं की धारणा)

यह गेंद है।

वह बल्ला है।

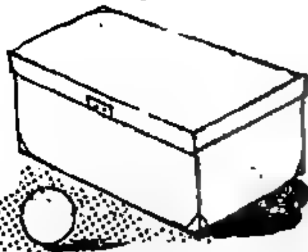
गेंद **इधर** है। बल्ला **उधर** है।



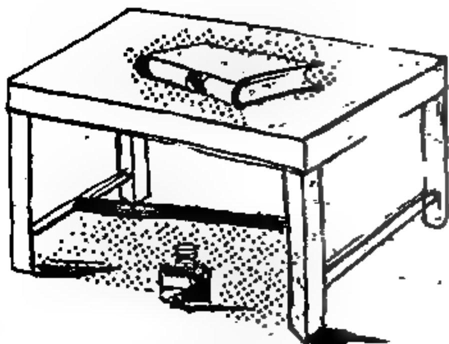

ये सेब हैं।

वे केले हैं।

सेब **इधर** हैं। केले **उधर**।



यह सन्दूक़ है। सन्दूक़ में हम चीज़ें रखते हैं। कपड़े सन्दूक़ के **अन्दर** रख दिए। गेंद सन्दूक़ के **बाहर** रह गई।



यह क्या चीज़ है?

मेज़।

मेज़ के **ऊपर** क्या है?

किताब।

मेज़ के **नीचे** क्या है?

दवात।

हमारे **ऊपर** आसमान की छत और **नीचे** ज़मीन का फ़र्श है।

मैं बहुत तेज़ दौड़ता हूँ। सबसे **आगे** निकल जाता हूँ। सब बच्चे मुझसे **पीछे** रह जाते हैं।



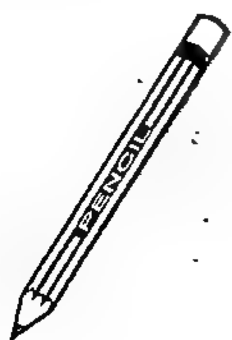
हमारे दो हाथ हैं। एक **सीधा** एक **उल्टा**।

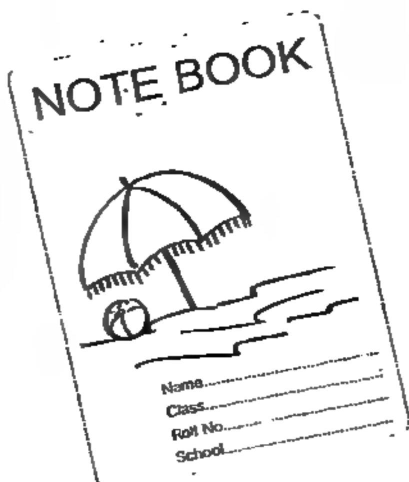
सीधे हाथ से हम खाते हैं।

उल्टे हाथ से नाक साफ़ करते हैं।

सीधे हाथ को **दायाँ** हाथ कहते हैं।

उलटे हाथ को **बायाँ** हाथ कहते हैं।







ऊपर तीन चीज़ें हैं। पेंसिल, कापी और रबर।

कापी **बीच** में है। **इधर** पेंसिल है। **उधर** रबर। पेंसिल कापी के **बाईं** तरफ़ है। रबर कापी के **दाईं** तरफ़ है।

निर्देश :

क्लास में रखी हुई विभिन्न वस्तुओं की सहायता से इधर, उधर, यहाँ, वहाँ, अन्दर, बाहर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ आदि दिशाओं और स्थितियों का बोध कराएँ।

12

चिड़ियों की बोलियाँ

पक्षियों की बोलियाँ मुझे बहुत पसन्द हैं।

मैं बहुत-सी बोलियाँ बोल लेता हूँ। लो सुनो। "चूँ, चूँ!" यह तो मुन्नी-मुन्नी मटियाले रंग की गौरैया है।

हमारी छत में इसका घोंसला है। हमारें आँगन में फिरती और दाना-दुनका चुगती रहती है। पकड़ने चलो तो फुर्र से उड़कर छत पर जा बैठती है।



"काएँ, काएँ!" यह तो कौआ है। काला कलूटा। पैर, पंख, चोंच सब काले-काले। नटखट इतना कि आपकी आँख बची और रोटी-बोटी सब लेकर चम्पत।

मुन्ने के तो हाथ से छीन ले जाता है। यह भी सुबह से हमारी छत पर बैठकर काएँ-काएँ करता रहता है। रोटी की ताक में लगा रहता है।

"कुकड़ू...कूँ!" यह तो मुर्ग़ा है। सुबह-सवेरे ही बाँग देता है।

"कटकट कटाक!" यह मुर्ग़ी है। मुर्ग़ी अण्डे देती है। अण्डों से बच्चे निकलते हैं।

छोटे-छोटे, जैसे रूई के खिलौने। ये चूज़े कहलाते हैं। मुर्ग़ी अपने नन्हें चूज़ों को लिए फिरती है। कट-कट दाना चुगना सिखाती है।







चूज़े चूँ-चूँ करते और पैरों से कूड़ा कुरेदते हैं। चूज़े मुर्ग़ी के पास ही रहते हैं। दूर जाएँ तो चील उचक ले जाए। चील झपटती है तो मुर्ग़ी उन्हें अपने परों के नीचे छुपा लेती है। उनके लिए बिल्ली से भी लड़ जाती है।

"टें-टें!" यह तोता है। तोता बहुत सुन्दर होता है। शरीर हरा-हरा, चोंच और पंजे लाल-लाल। पंजों से फल पकड़ता है और चोंच से कुतर-कुतरकर खाता है।

हम इसकी बोली की नक़ल उतारते हैं। यह हमारी बोली की नक़ल उतारता है।

"कूहू-कूहू!" यह कोयल है। काली-काली कौए जैसी। मगर आवाज़ बड़ी सुरीली है।

आम के दिनों में आती है। कूहू-कूहू करती है, मगर दिखाई नहीं देती।

लड़के कूहू-कूहू करके छेड़ते हैं तो यह और अधिक कूकती है।

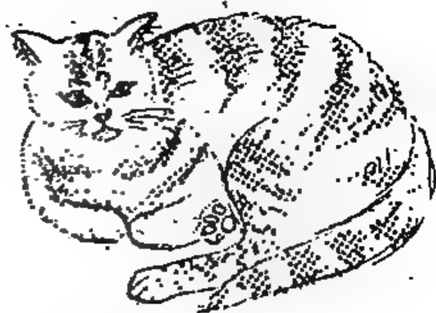
निर्देश :

घरों में और आस-पास रहनेवाले अन्य पक्षियों, जैसे कबूतर, फ़ाख़्ता, बतख़, तीतर, मैना आदि की बोलियाँ और उन पक्षियों की जानकारी छात्रों को दें।

13

पालतू जानवर

(बिल्ली)



हमने एक बिल्ली पाली है। उसका रंग सफ़ेद और काला है। उसका नाम पूसी है। हम पूसी को पुस-पुस करके बुलाते हैं। वह म्याऊँ-म्याऊँ करके हमारी गोद में आ बैठती है।

हम अपनी पूसी को दूध-चावल खिलाते हैं। सुनते हैं कि बिल्ली का ध्यान सदा छिछड़ों में रहता है। तभी तो हम छिछड़े ला देते हैं। पूसी बड़े चाव से खाती है।

भाईजान पूसी को शेर की मौसी कहते हैं। जब से पूसी आई घर में एक चूहा न रहा। कुछ को चट कर गई, कुछ डरकर भाग गए। पूसी चूहे ख़ूब पकड़ती है। रसोईघर या अनाज की कोठरी में चुपके से बैठ जाती है। शिकार के समय उसकी सूरत इतनी भोली-भाली बन जाती है कि प्यार करने की इच्छा होती है। न बोलना, न हिलना-डुलना। ज्यों ही कोई चूहा या चुहिया बिल में से निकली, पूसी ने उसे दबोच लिया और मूँछे खड़ी करके चट कर गई।

आँखें बहुत तेज़ हैं। अँधेरे में देख लेती है। कान तेज़ हैं। चूहे बिल के अन्दर चलें तो आहट सुन लेती है। पैर गद्दीदार हैं। चलती है तो आहट नहीं होती। फिर भला पूसी की पकड़ से चूहे कैसे बच सकते हैं!

एक बार चूहों ने पूसी के गले में घण्टी बाँधने की सोची ताकि पूसी आए तो पता चल जाए। मगर घण्टी बाँधने के लिए पूसी के पास जाना था। उसके लिए कोई तैयार न हुआ।

अब पूसी आज़ाद फिरती है और चूहों का शिकार करती है।

पूसी के होते घर में दूसरी बिल्ली घुस नहीं सकती। पूसी मारकर उसे भगा देती है।

एक रात हम सब सो रहे थे। एक बिल्ली चुपके से घुसी। पूसी ने उसे देख लिया और ग़ुर्राकर उसपर टूट पड़ी। फिर तो दोनों ने इतना शोर मचाया कि घर भर की नींद उचाट हो गई।

मगर पूसी कुत्ते से बहुत डरती है। एक दिन मैं पूसी को लेकर बाहर चला गया। पड़ोसी का कुत्ता भों-भों करके दौड़ा। पूसी कूदकर पेड़ पर चढ़ गई। कुत्ता चढ़ न सका। नीचे खड़ा भौंकता रहा।

निर्देश :

इसी के अन्तर्गत दूसरे पाल्तु जानवर जैसे कुत्ता, गाय, बकरी और ख़रगोश की शक्ल-सूरत, उनके खान-पान और स्वभाव के बारे में भी बताएँ।

14

मक्खी और चींटी



मक्खी

घर पर मेहमान आए। अम्मी ने मिठाई लेने के लिए बाज़ार भेजा। एक मिठाई की दुकान पर जब मैं पहुँचा तो देखा कि वहाँ मक्खियाँ बहुत भिनक रही हैं। बार-बार मिठाई पर बैठ ज़ाती हैं। मुझे बड़ी घिन आ रही थी। घिन भी क्यों न आए! ये मक्खियाँ कूड़े-करकट पर जो बैठती हैं। वहाँ वे अण्डे-बच्चे देती हैं। गन्दगी न हो तो एक न रहे।

छी-छी! मक्खी गन्दगी पर बैठती है। पैरों में गन्दगी लगाकर आती है। खाने पर बैठ जाए तो खाना गन्दा हो जाए। हमारा घर तो साफ़-सुथरा रहता है, इसलिए हमारे घर में एक भी मक्खी नहीं होती।

उस मिठाई की दुकान से मैंने मिठाई नहीं ख़रीदी। एक साफ़-सुथरी दुकान से मिठाई ख़रीदी। मैं रास्ते में सोचता आ रहा था कि न-जाने अल्लाह तआला ने ऐसा गन्दा जीव क्यों पैदा किया?

तौबा-तौबा! ऐसा नहीं कहना चाहिए। अल्लाह तआला ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई। मुझे एक राजा की बात याद आई। उसने भी एक बार यही कहा था। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि एक दिन राजा शिकार को गया। थका-हारा एक पेड़ के नीचे लेटा। आँख लग गई। सोया ही था कि उसके ऊपर मक्खियाँ भिनभिनाने लगीं। नींद उचाट हो गई। ग़ुस्से में उठा। मक्खियों को बुरा-भला कहा। बोला, "न जाने- अल्लाह तआला ने मक्खियों को क्यों बनाया?" इतने में राजा

ने एक साँप देखा। साँप राजा को सोता हुआ पाकर काटने आया था। राजा जागा तो साँप डरकर भागा। अब राजा ने समझा कि अल्लाह ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई।

मक्खी हमारी मेहतरानी है। बहुत-सी गन्दगी खाकर साफ़ कर देती है। और हमसे पैसे भी नहीं लेती।



चींटी



कौन है, जिसने चींटी न देखी हो?

नन्हीं-सी जान, खाने की खोज में इधर-उधर फिरा करती है। दिन भर में न जाने कितनी चींटियाँ हमारे जूते से दब जाती हैं। हमारी तरह चींटी भी मिठाई बड़े चाव से खाती है। शकर या मिठाई का चूरा गिर जाए तो लाइन बनाकर पहुँच जाएँगी और एक-एक दाना उठाकर ले जाएँगी।

घर में शकर या गुड़ आता है। उनके जासूस सूँघकर पता लगा लेते हैं। फ़ौरन सबको ख़बर हो जाती है। देखते ही देखते बहुत-सी चींटियाँ पहुँच जाती हैं। तभी तो अम्मी गुड़ और शकर डब्बों में बन्द करके रखती हैं।

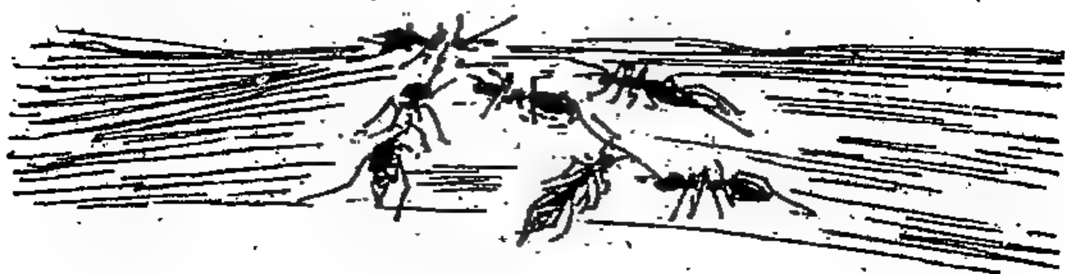
चींटी देखने में नन्हीं-सी है मगर गुणों से भरी है। मेहनती इतनी कि अपने क़द से बड़ा बोझ लेकर चलती है। बहादुर इतनी कि बड़े से बड़े कीड़े से लिपट जाए तो क्या मजाल कि कीड़ा भाग सके। बहुत-सी चींटियाँ मिलकर उसे खींच ले जाती हैं।

न जाने कितनी चीटियाँ एक साथ रहती हैं। फिर भी न लड़ाई, न झगड़ा, न मार-पीट। मिल-जुलकर रहती हैं। एक को कुछ मिल जाए तो सब मिल-बाँटकर खाती हैं। अपना घर साफ़ रखती हैं। काम बँटा हुआ है। हर एक अपना काम डटकर करती है।

अल्लाह ने इसे भी हमारे लिए बनाया है। हमारे घर में न जाने कितने कीड़े-मकोड़े होते हैं। रौशनी पर पतिंगे गिरते हैं। ये बेचारी सबको घसीट ले जाती हैं। घर को साफ़ कर देती हैं।

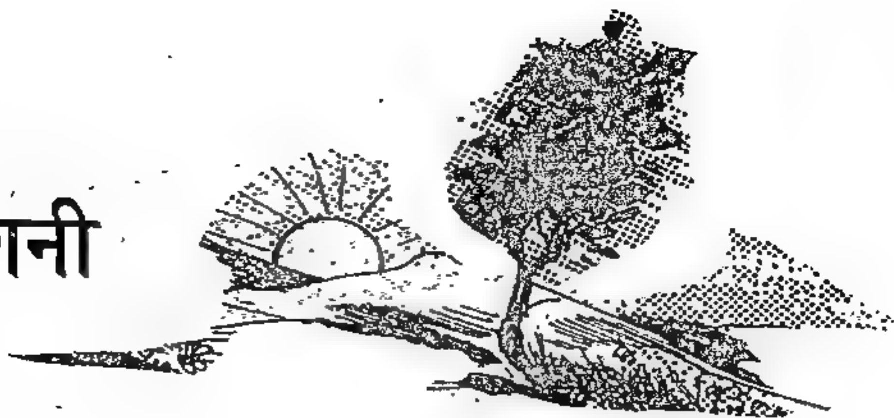
निर्देश :

चींटी के साथ दीमक का भी संक्षिप्त परिचय करा दें।



15

रौशनी



अल्लाह ने सूरज बनाया है। सूरज निकलते ही चारों तरफ़ उजाला फैल जाता है। जहाँ चाहें आएँ-जाएँ। जो चाहें लिखें-पढ़ें। छोटी बड़ी हर चीज़ मज़े से देख लें।

रात में चाँद चमकता है। तारे जगमग-जगमग करते हैं। अल्लाह ने हमारे लिए अनगिनत दीपक जलाए हैं। इनसे यात्रा में सुविधा होती है। मगर इनकी रौशनी में तेज़ी नहीं होती कि रात का अँधेरा दूर हो जाए। चाँद की रौशनी कुछ ज़्यादा तेज़ होती है, मगर वह ज़्यादातर ग़ायब रहता है। चाँद निकले भी तो कमरे में अँधेरा रहता है। चाँद की रौशनी में न ठीक से अल्फ़ाज़ दिखाई देते हैं, न हम पढ़-लिख सकते हैं।

रात में रौशनी के लिए आप अपने घर में क्या करते हैं?

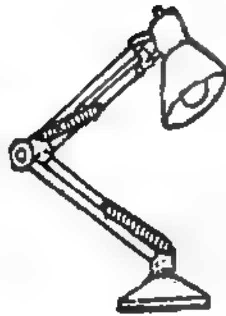
हमारे घर में बिजली है। बटन दबाते ही कमरा रौशन हो जाता है। अँधेरे में बाहर जाने के लिए टॉर्च है। बटन दबाते ही रौशनी हो जाती है। यह बैट्री (Cell) से जलती है।





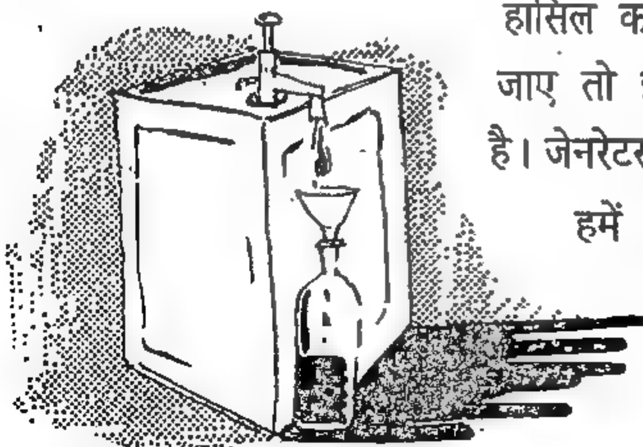

अकबर के घर बिजली नहीं है। वहाँ लालटेन जलती है। उसमें मिट्टी का तेल जलता है। मिट्टी के तेल में बदबू होती है। तभी तो मस्जिद में चिराग़ है। चिराग़ में सरसों का तेल जलता है। अगर तेल न मिले तो हम मोम-बत्ती से भी रौशनी हासिल करते हैं।





शादी-ब्याह में (अगर बिजली न हो तो) हण्डे जलते हैं। हण्डे में भी मिट्टी का तेल जलता है, मगर रौशनी बहुत तेज़ होती है। मिट्टी का तेल ज़मीन से निकलता है। ज़मीन के नीचे उसके ख़ज़ाने हैं।

रौशनी हासिल करने के और भी ज़रीए हैं। गैस प्लांट से भी रौशनी हासिल करते हैं। शहरों में बिजली चली जाए तो इन्वरटर के ज़रीए रौशनी होती है। जेनरेटर भी इस्तेमाल करते हैं।



हमें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने हमें देखने के लिए जहाँ दो आँखे दीं वहीं आँखों के लिए रौशनी का इन्तिज़ाम किया। हम अल्लाह की इन नेमतों की क़द्र करेंगे। इस रौशनी में अपनी आँखों से कोई ग़लत बात न देखेंगे और न करेंगे।

हफ़्ते के सात दिन

अम्मी! अम्मी! आज हमारा जलसा था। हर जुमेरात को होता है। आज मैंने भी हिस्सा लिया था। 'तितली' वाली नज़्म सुनाई थी। सबने बहुत पसन्द की। हमारे उस्ताद साहिब ने भी बहुत तारीफ़ की। आनेवाली जुमेरात को मैं 'प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारी बातें' सुनाऊँगा।

क्यों अम्मी! अब अगले जलसे के कुल सात दिन रह गए हैं ना? कल जुमा है। छुट्टी रहेगी। स्कूल जाना नहीं है। ख़ूब खेलेंगे-कूदेंगे। फिर नहा-धोकर कपड़े बदलेंगे। भाईजान के साथ जामे मस्जिद जाएँगे। वहाँ नमाज़ पढ़ेंगे और इमाम साहब से अच्छी-अच्छी बातें सुनेंगे।

परसों हफ़्ता (शनिवार) है। हफ़्ते को स्कूल जाएँगे। साथियों से मिलेंगे। सब आजवाली नज़्म की तारीफ़ करेंगे।

जुमा और हफ़्ता बीत जाएँ, फिर इतवार आ जाएगा। इतवार को दुकान बन्द रहेगी। अब्बू घर पर रहेंगे। मज़े-मज़े की बातें होंगी। इतवार को स्कूल, डाकख़ाने, कचहरी और दफ़तर सब बन्द रहते हैं।

इतवार के बाद पीर (सोमवार) आ जाएगा। क्यों अम्मी! पीर ही को तो हमारे प्यारे नबी (सल्ल॰) पैदा हुए थे। पीर को दुकान और डाकख़ाने दोनों खुलेंगे। इस तरह जुमा, हफ़्ता (शनिवार), इतवार और पीर (सोमवार) चार दिन बीत जाएँगे।

अब बीच में दो दिन और रह जाएँगे – मंगल और बुध। इनके बीत जाने पर छः दिन हो जाएँगे। जुमा, हफ़्ता, इतवार, पीर, मंगल और बुध।

इसके बाद तो जुमेरात ही है। जुमेरात को दोपहर तक लिखेंगे-पढ़ेंगे। तीसरे पहर को जलसा होगा। सब बच्चे इकट्ठा होंगे। अदब से बैठेंगे। क़ुरआन की तिलावत के बाद जलसा शुरू होगा। अपनी-अपनी बारी पर सब सुनाएँगे। मैं भी "प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारे बातें" सुनाऊँगा। ख़ूब मज़ा आएगा।

क्यों अम्मी! हफ़्ते के यही सात दिन होते हैं ना?

हफ़्ता, इतवार, पीर, मंगल, बुध, जुमेरात और जुमा।



निर्देश :

छात्रों को सप्ताह के सातों दिन पहले क्रम से याद करा दें। फिर बीच के किसी दिन से आरम्भ करके पूरे सप्ताह के दिनों की पुनरावृत्ति कराएँ।

17

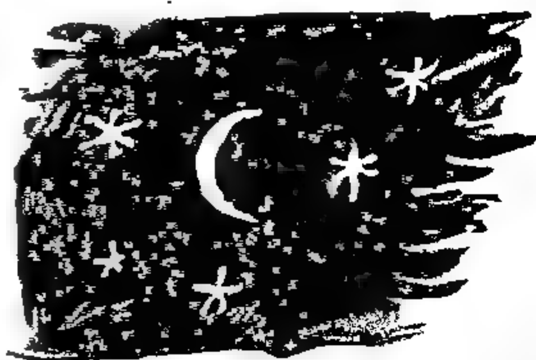


आसमान

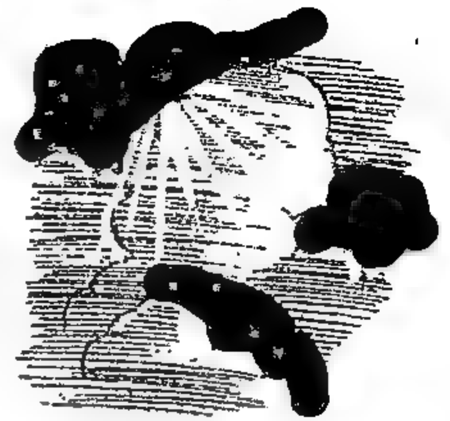
ज़रा ऊपर देखो! नीला-नीला आकाश कितना प्यारा लगता है।

सुबह जब सूरज निकल रहा था तो किनारा लाल हो रहा था। लगता था जैसे आग लगी हो। सूरज ऊपर आ गया तो आसमान की लाली ग़ायब हो गई। सूरज दिन भर आसमान की सैर करता है। शाम के वक़्त डूब जाता है। डूबते वक़्त आसमान का किनारा फिर लाल हो जाता है। धीरे-धीरे रौशनी ग़ायब होकर रात छा जाती है।

रात में आसमान पर चाँद चमकता है। नन्हे-मुन्ने तारे जगमग-जगमग करते हैं। तारों भरा आसमान बड़ा प्यारा लगता है। जी चाहता है बस देखते रहो। न जाने अल्लाह ने इस नीले महल में कितने दीपक जला दिए हैं!



ईद का चाँद बहुत दुबला-पतला था। बड़ी कठिनाई से दिखाई दिया। नया चाँद हमारी तरह नन्हा-मुन्ना होता है, मगर धीरे-धीरे बढ़कर बड़ा हो जाता है। हम भी एक दिन बड़े हो जाएँगे। फिर तो चमक-चमक कर दुनिया का अँधेरा दूर करेंगे।



कभी-कभी आसमान पर बादल छा जाते हैं। फिर तो सूरज की भी नहीं चलती। न जाने कहाँ ग़ायब हो जाता है।

बादल घने न हों तो सूरज उनसे आँख मिचौली खेलता है। कभी छुप जाता है, कभी निकल आता है। उस दिन हम भी धूप-छाँव का खेल खेलते हैं।

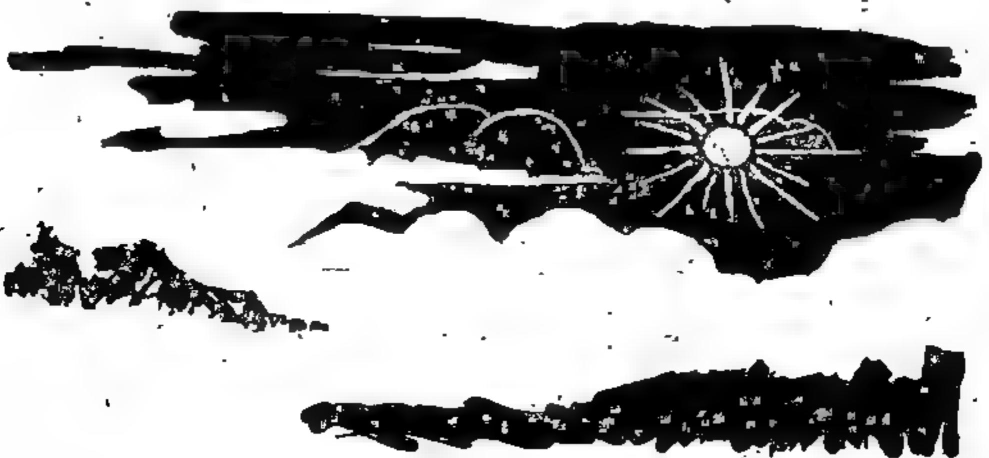
अल्लाह ने हमारे लिए न जाने कितनी चीज़ें बनाई हैं!

पैरों तले ज़मीन का लम्बा-चौड़ा फ़र्श है।

सिर पर आसमान की नीली-नीली छत।

आसमान की इस छत के नीचे, ज़मीन के इस फ़र्श पर, अल्लाह के न जाने कितने बन्दे रहते हैं।

अल्लाह तआला किसी से किराया नहीं लेते।



सिक्के और बाट

हमारे अब्बाजान बहुत अच्छे हैं। हमारे लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें लाते हैं। खाने के लिए मेवे और मिठाई, खेलने के लिए खिलौने।

ये सब चीज़ें अब्बाजान बाज़ार से लाते हैं। एक दिन मैं भी उनके साथ बाज़ार गया। बाज़ार में बहुत-सी दुकानें हैं। कुछ दुकानें फलों की हैं। कुछ दुकानें मिठाइयों की हैं। कुछ दुकानों पर नमक, मिर्च और मसाला मिलता है, किसी पर कपड़े। कहीं तरह-तरह के ख़िलौने मिलते हैं, दवात, काग़ज़, पेन, पेंसिल और किताबें वग़ैरह। जो चीज़ चाहो इन दुकानों से ले सकते हो, मगर मुफ़्त में नहीं, दाम देना होगा।

छोटी-मोटी चीज़ हुई तो एक या दो रुपये देने से काम चल जाएगा। नहीं तो पाँच रुपये दस रुपये या और ज़्यादा देने होंगे।

रुपया, दो रुपये और पाँच रुपये– ये सब सिक्के हैं। तुम इन सिक्कों को तो पहचानते होगे। इन्हें देखकर बताओ।



एक रुपया कौन-सा है? दो रुपये, पाँच रुपये के सिक्के कौन-से हैं?

अब्बाजान ने बताया कि पहले एक पैसा, दो पैसे, तीन पैसे, पाँच पैसे, दस पैसे बीस पैसे, पच्चीस पैसे और पचास पैसे के सिक्के भी चलते थे। अब नहीं चलते।

कुछ सिक्के जमा करो और उन सिक्कों को तुम ग़ौर से देखो। कुछ छोटे हैं, कुछ बड़े हैं और कुछ मोटे।

जिस तरह उनकी शक्ल और सूरत में फ़र्क़ है उसी तरह उनकी क़ीमत में भी फ़र्क़ है।

ईद के दिन अब्बाजान ने हमें दस रुपये ईदी दी थी। हमने उसको भुनाया तो एक-एक रुपये के दस सिक्के मिले। पाँच मैंने लिए और पाँच भाईजान ने। एक रुपया सौ पैसों का होता है। एक रुपये में पचास पैसे के दो सिक्के होते हैं। अगर पचास-पचास पैसों के सिक्के लेते तो दस रुपये के बीस सिक्के मिलते। अब्बू ने पूछा कि बताओ अगर दो-दो रुपये के सिक्के लेते तो कुल कितने सिक्के मिलते?

बाज़ार में कुछ चीज़ें गिनकर बिकती हैं और कुछ तौलकर। खिलौने, और ग़ुब्बारे वग़ैरा गिनकर बिकते हैं। मेवे, मिठाई, मिर्च और मसाले वग़ैरा तौलकर। तौलने के लिए दुकानदार तराज़ू और बाट रखते हैं।





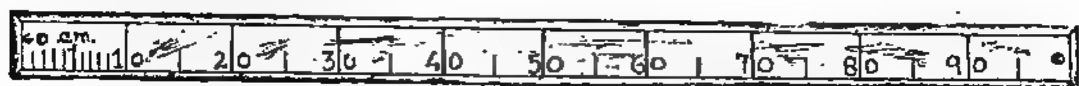



बाट में सबसे बड़ा किलोग्राम होता है और सबसे छोटा ग्राम। एक किलोग्राम का बाट एक हज़ार ग्राम के बराबर होता है। आधा किलोग्राम का बाट पाँच सौ ग्राम का और चौथाई या पाव किलोग्राम ढाई सौ ग्राम का होता है। सौ ग्राम, पचास ग्राम, बीस ग्राम और दस ग्राम के बाट भी होते हैं।

कपड़ा मीटर से नापकर बिकता है। मीटर लोहे की एक छड़ होती है। एक मीटर में सौ सेंटीमीटर होते हैं। एक और पाँच सेंटीमीटर पर

हलके निशान बने होते हैं। पच्चीस, पचास और पचहत्तर सेंटीमीटर पर निशान कुछ गहरे होते हैं।

सिक्के, बाट और मीटर हमारे बहुत काम आते हैं। इनसे हम चीज़ें ख़रीदते, तौलते और नापते हैं।



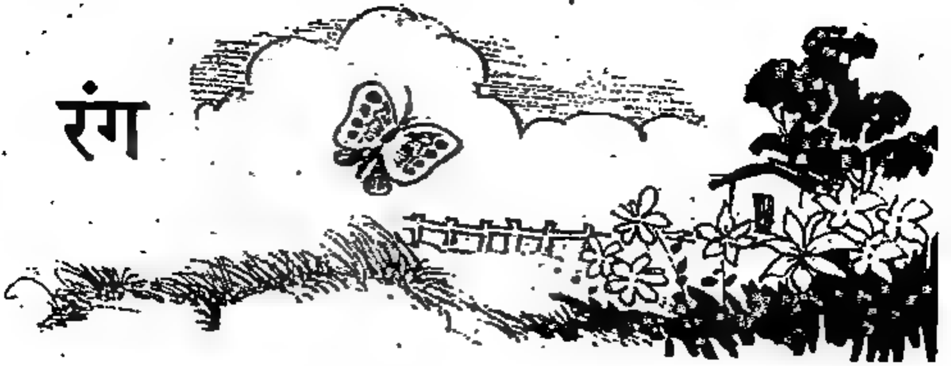
कुछ चीज़ें पैमानें से नापकर दी जाती हैं। दूध और तेल पैमाने में भरकर और नापकर बेचे जाते हैं। इन पैमानों के बारे में हम अगली क्लास में पढ़ेंगे।

निर्देश :

बच्चों को सिक्के और बाटं दिखाकर अच्छी तरह पहचान करा दें और उनका मूल्य तथा वज़न भी याद करा दें। मीटर की छड़ दिखाकर सेंटीमीटर की पहचान करा दें। क्लास में ऐसी व्यवस्था की जाए कि सिक्के, बाट और मीटर को बच्चे अपने हाथों में लेकर देख सकें।

19

रंग



आओ सैर करने चलें। सैर करने में बड़ा मज़ा आता है। जिधर देखो रंग-बिरंगी चीज़ें दिखाई देती हैं। कोई लाल है, तो कोई पीली, कोई नीली है, तो कोई हरी। रंगीन चीज़ें देखने में बहुत ख़ूबसूरत लगती हैं।

न जाने अल्लाह तआला को भी रंग बहुत पसन्द है या सिर्फ़ हमारे लिए ही उन्होंने यह मेहरबानी की है। जिधर नज़र डालते हैं, दिल ख़ुश हो जाता है।

इतना लम्बा-चौड़ा आसमान है। पूरे का पूरा नीले रंग में रंगा है। ज़मीन पर जैसे ही पानी गिरा, हरियाली छा गई। घास हरी, पेड़-पौधों की पत्तियाँ हरी। खेत, बाग़-बग़ीचे और जंगल सब हरे-भरे।

पेड़-पौधों में न जाने कितने फूल लगे हैं। कोई फूल लाल है, कोई नीला, कोई पीला तो कोई बैंगनी।

गुड़हल का फूल लाल है तो सरसों और गेंदे के पीले।

फूलों के रंग कितने प्यारे लगते हैं।

फूलों पर तितलियाँ बैठती हैं। ये भी रंग-बिरंगी होती हैं। पर छूकर देखो, रंग छूटकर हाथ में लग जाता है। उड़ती हैं तो लगता है जैसे अल्लाह तआला ने फूलों में जान डाल दी हो।

फल और सब्ज़ियाँ देखो। टमाटर लाल है। लौकी और तुरई हरी, ख़रबूज़ा पीला है तो तरबूज़ अन्दर से लाल-लाल है। नारंगी और सन्तरे भी नारंगी रंग के हैं। बैंगन बैंगनी रंग का है।

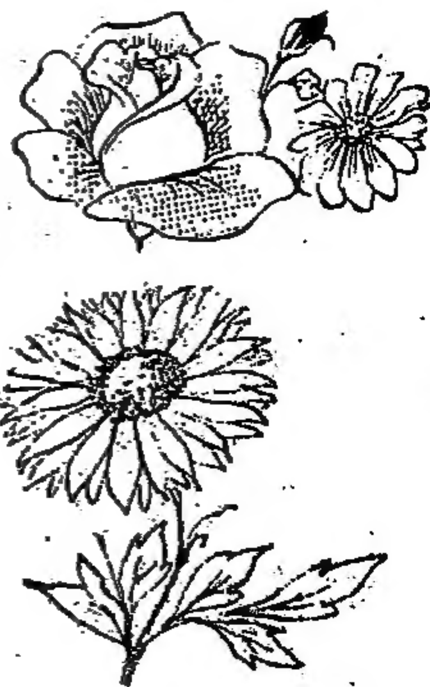


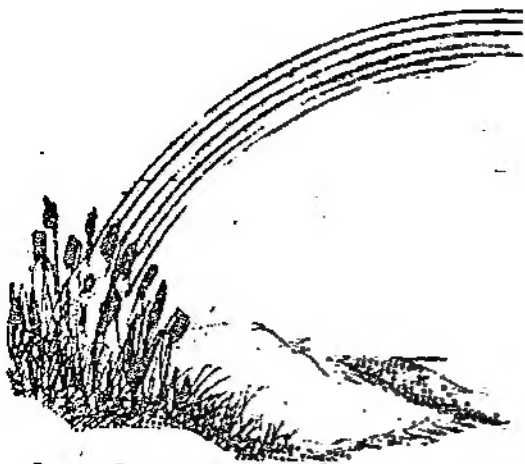
चिड़ियाँ और जानवर भी रंग-बिरंगे होते हैं। मोर नीला होता है। कोयल काली-काली। तोता हरा-हरा है। मगर चोंच लाल-लाल है।

मैं सब रंग पहचानता हूँ। लाल, पीला, हरा, नीला, नारंगी, बैंगनी।

अम्मी दुपट्टा रंगने के लिए रंग मँगाती हैं या फूल काढ़ने के लिए धागा, जो रंग कहती हैं, मैं फ़ौरन ला देता हूँ। तुम भी याद कर लो।

गुड़हल के फूल, टमाटर और तोते की चोंच का रंग लाल होता है। पिसी हुई हल्दी, गेंदे और सरसों के फूल, अरहर और चने की दाल का रंग पीला होता है। आसमान का रंग नीला और पत्तियों का रंग हरा, सन्तरे का रंग नारंगी और बैंगन का रंग बैंगनी या ऊदा कहलाता है।





वह देखो आसमान पर इन्द्र-धनुष दिखाई दे रहा है। उसमें तो सभी रंग हैं। लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, बैंगनी और बनफ़शी (नीलापन लिए हुए लाल)।

अब ज़रा बताओ तुम्हारे खिलौने, कपड़े और किताबों की जिल्दें किस-किस रंग की हैं? तुम्हारी किताबों के ऊपरी पृष्ठ पर क्या-क्या चीज़ें बनी हैं? ये किस-किस रंग की हैं?

निर्देश :

उपरोक्त सात रंगों की पहचान के लिए रंगीन काग़ज़, काँच, चूड़ियों के टुकड़े, कपड़ों की कतरन, फूल, चित्र और खिलौने आदि एकत्र कराएँ और उन्हें रंगों की पहचान कराएँ।

20

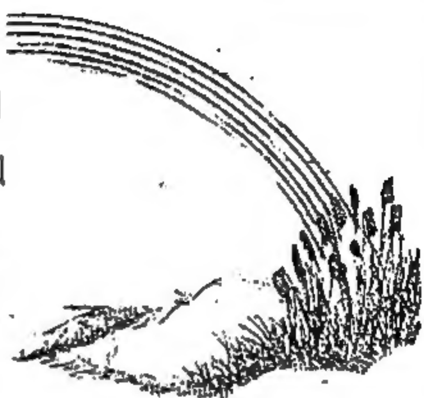
मैं बता सकता हूँ कि....

1. हमें, आपको, ज़मीन और आसमान की सारी चीज़ों को किसने पैदा किया है?
2. दुनिया का सारा सामान अल्लाह ने किसके लिए पैदा किया है?
3. हमारे जिस्म के कितने अंग हैं? हर अंग किस लिए है?
4. हाथ, मुँह, चेहरा और दाँत किस तरह साफ़ करें?
5. दिन में कितनी बार खाएँ? खाने में किन-किन बातों का ख़याल रखें?
6. हमारे यहाँ लोग क्या-क्या पहनते और ओढ़ते हैं?
7. स्कूल जाने से पहले और वहाँ पहुँचकर किन-किन बातों का ख़याल रखें?
8. आम, अमरूद, आलू, तरबूज़, तुरई, शलजम, केला, अंगूर, शरीफ़ा, बैंगन, लौकी, सेब और अनार में कौन फल है और कौन सब्ज़ियाँ?
9. गेंद-बल्ला, आँख-मिचौली और अंधे-भैंसे का खेल किस तरह खेलते हैं?
10. पानी कहाँ-कहाँ से मिलता है और किन-किन कामों में उसका इस्तेमाल होता है? पीने का पानी किस तरह बचाकर रखें?
11. हम किन-किन सवारियों पर आते-जाते हैं? ये कैसे चलती हैं?
12. तोता, कौआ, मुर्ग़ा, गौरैया, कोयल और मुर्ग़ी की बोली क्या है?
13. मक्खी और चींटी हमारे क्या-क्या काम करती हैं?
14. हफ़्ते में कितने दिन होते हैं? दिनों के नाम क्या हैं?

15. हम किन-किन सिक्कों से चीज़ें ख़रीदते हैं? किन-किन बाटों से तौलकर चीज़ें मिलती हैं? कौना-सा बाट छोटा और कौन-सा बड़ा होता है?

16. इन्द्रधनुष में कौन-कौन से रंग होते हैं?

और यह कि–



1. मेरा नाम.................................है।
2. मैं कक्षा ....में पढ़ता हूँ।
3. हमारे स्कूल का नाम ....है।
4. मैं ....का रहनेवाला हूँ।
5. हमारे मुहल्ले का नाम ....है।
6. डाकघर ....है।
7. हमारा घर ज़िला ....में है।
8. हमारे अब्बाजान का नाम जनाब ....साहिब है।
9. अम्मी का नाम मुहतरमा..साहिबा है।
10. हम सब ....भाई-बहन हैं। भाई ....और बहने ....हैं।
11. हमारे अब्बूजान..हैं।

